पाठ 15

अरावली की आत्मकथा

मैं अरावली पर्वत हूँ, मेरी अनेक श्रेणियाँ हैं; जिन्हें तुम अरावली पर्वतमाला कहते हो। धरती मेरी माता है। मेरा जन्म पुरा केंब्रियन युग में हुआ था। मैं धरती माता की कोख से लगभग 70 करोड़ वर्ष पहले जन्मी विश्व के सबसे प्राचीन पर्वतमालाओं में से एक हूँ। यहाँ बहने वाली हवाओं ने यह मेरे कान में कहा है। मैंने जब से होश संभाला है, इस तथ्य को मैं भी समझने लगा हूँ। अतः मैं धरती माता का सबसे प्राचीन पर्वत हूँ।

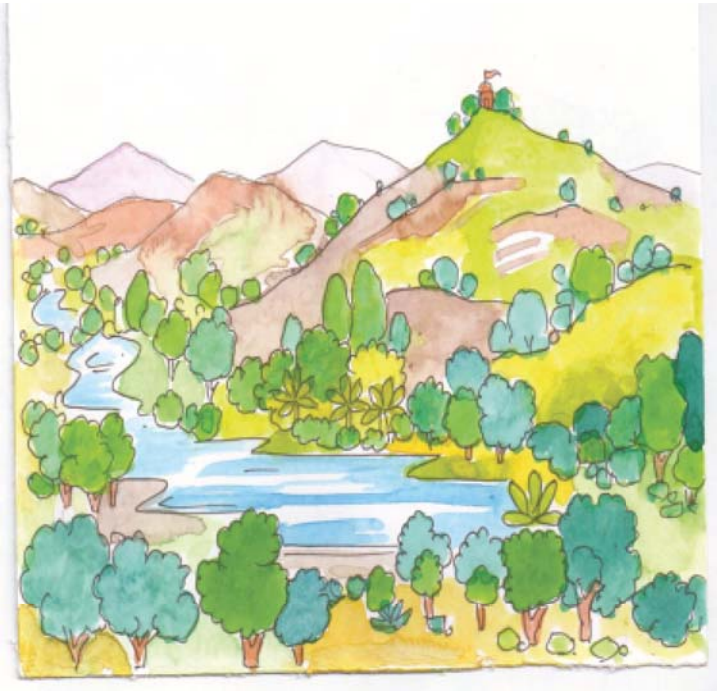

मैं जानता हूँ, धरती माता अंतरिक्ष में प्रतिपल घूम रही है। मैं भी धरती माता की गोद में प्रतिपल अंतरिक्ष में घूमता हूँ। इसके अक्ष पर घूमने को तुम घूर्णन तथा सूर्य के कक्ष में घूमने को परिभ्रमण कहते हो। धरती माता की इन दो गतियों के प्रभाव से मेरी ऊँचाई का घर्षण होता रहा है। इस कारण पिछले करोड़ों वर्षों में मेरी ऊँचाई कम हुई है; किंतु धरती माता की गोद में घूमना मुझे अच्छा लगता है।

मेरा शरीर आग्नेय चट्टानों के आड़े वलय से बना है। अतः मुझे 'आड़ावल' कहा जाता है। यह राजस्थानी भाषा का शब्द मुझे बहुत प्रिय है; क्योंकि मानव सभ्यता के आदिकाल में मैंने यह शब्द आदिवासियों के मुख से सुना था। यह बहुत प्राचीन शब्द है। उस समय आदिमानव की भाषा विकसित हो रही थी। आर्यों के रहने के कारण अंग्रेजों ने इसे 'Aryan Vally' (आर्यों की घाटी) कहा। मुझे आज आप अरावली कहते हो।

भारत मेरा निवास स्थान है। इसके पश्चिमी भाग में मेरा घर है। इसमें मैं दक्षिण से उत्तर की ओर 692 किलोमीटर की लंबाई में फैला हूँ। गुजरात के खेड़ब्रह्म से दिल्ली तक मेरा विस्तार है। राजस्थान मेरे विस्तार के मध्य में है। मेरी चौड़ाई तथा ऊँचाई दक्षिण में अधिक है। यह उत्तर की ओर कम होती जाती है। आप मेरे भौतिक स्वरूप को दक्षिणी अरावली, मध्य अरावली तथा उत्तरी अरावली के रूप में देखते हो। इसमें मुझे कुछ भी आपत्ति नहीं। यह आपके अध्ययन की सुविधा का विषय है।

मैं तो यह जानता हूँ कि दक्षिणी अरावली का विस्तार खेड़ब्रह्म से लेकर दक्षिणी राजस्थान के कई ज़िलों में है। डूँगरपुर, बाँसवाड़ा, सिरोही, उदयपुर, चित्तौड़गढ़ तथा प्रतापगढ़ ज़िले मेरे प्रमुख क्षेत्र हैं। सिरोही ज़िले के आबू पर्वत में स्थित मेरे गुरुशिखर की ऊँचाई 1722 मीटर है। यह मेरी सबसे ऊँची चोटी है। उदयपुर के निकट जरगा की पहाड़ियों की ऊँचाई 1431 मीटर है।

मैं इन क्षेत्रों से आगे उत्तर की ओर राजसमंद, भीलवाड़ा, अजमेर तथा पाली, ज़िलों तक फैला हूँ। मेरा यह क्षेत्र मध्य अरावली कहलाता है। उससे आगे सीकर, जयपुर तथा अलवर ज़िलों तथा दिल्ली तक मेरा विस्तार है। आप इसे उत्तरी अरावली कहते हो। दिल्ली के निकट मेरी ऊँचाई घटकर 400 मीटर ही रह जाती है।

मेरा प्रांगण सदैव हरा–भरा रहता है। मेरा दक्षिणी तथा मध्य क्षेत्र सघन वनों का गढ़ है। शायद ही कोई ऐसा वृक्ष हो जो मेरे प्रांगण में न पाया जाता हो। सागवान, शीशम, नीम और आम का तो कहना ही क्या! मेरे दक्षिणी अरावली में स्थित नगर में सागवान की बहुतायत के कारण ही तो सागवाड़ा नाम पड़ा है। बाँसवाड़ा में किसी जमाने में बाँस अधिक होते थे। इस क्षेत्र में पर्वत शृंखलाओं की बहुतायत है। इन्हें राजस्थान के निवासी 'डूँगर' कहते हैं। अतः इस भाग में एक नगर का नाम डूँगरपुर भी है।

एक ज़माना था जब मेरे सघन वनों में अनेक चिड़ियाएँ चहकतीं थीं और मोर नाचते थे। मैंने शेरों की दहाड़ें सुनी हैं। मैंने हरिणों के झुंड को कुलाँचें भरते देखा है। उस समय मैं कितना प्रफुल्ल था, आप अनुमान नहीं लगा सकते। उस आनंद की अनुभूति में ही तो आपने मेरे क्षेत्र के आबू, कुंभलगढ़, रणथम्भौर, सरिस्का आदि क्षेत्रों को अभयारण्य घोषित किया है। 'घना पक्षी विहार' तो मेरे प्रांगण के प्राकृतिक सौंदर्य में चार चाँद लगाता है। यहाँ सर्दी की ऋतु में विदेशों से पक्षी आते हैं। यह देखकर ही तो आपने इन सभी रमणीय स्थानों को पर्यटन स्थल बना लिया है; किंतु अब वह सारा सौंदर्य दिन–ब–दिन गायब हो रहा है। शायद आपका अंधा स्वार्थ इसके लिए उत्तरदायी है। मित्रो! मेरा मन कुछ उदास है। मेरी उदासी को समझो!

मुझे मेरे भाग्य पर गर्व रहा है। मुझे प्रकृति ने धरती–धन की दृष्टि से बहुत सम्पन्न बनाया है। लोहा, जस्ता, चाँदी, ताँबा, कोयला, एस्बेस्टस, टंगस्टन आदि अनेक खनिज मेरे क्षेत्र में पाए जाते हैं। इसलिए ही तो

राजस्थान को खनिजों का अजायबघर कहा जाता है। संगमरमर का तो कहना ही क्या! प्रकृति ने ग्रेनाइट, काले, लाल, सफेद, पीले आदि कई प्रकार के संगमरमर से मेरे क्षेत्र को नवाज़ा है। मकराना के मेरे सफेद संगमरमर से ताजमहल बना है। यह उच्च कोटि का संगमरमर है। विदेशों तक इसका निर्यात होता है। हाँ, मैं चूना पत्थर का भी भंडार हूँ। आपने सीमेंट के सर्वाधिक कारखाने मेरे दक्षिण तथा मध्य क्षेत्र में ही स्थापित किए हैं। मेरे संगमरमर तथा सीमेंट से आपने भव्य भवन खड़े कर दिए हैं। ऐसा करते हुए आप अपने आप को सभ्य मानने लगे हो। कोई बात नहीं! मानो, मैं आपको नहीं रोकता।

किंतु मित्रो! मेरे मन में एक पीड़ा है। आपने मेरे धरती–धन को खोदकर मुझे खोखला कर दिया है। खानें बना दी हैं। दिन–रात पर्वतों को काट रहे हो। मेरी चट्टानों पर आपके छैनी हथौड़े की चोट से मैं चीख उठता हूँ। मत काटो, मेरी चट्टानों को मत काटो! आप अपने लिए सुविधाएँ जुटाने में मेरे धरती–धन का दुरुपयोग कर रहे हो। आप वृक्ष काट रहे हो। कारखाने खड़े कर रहे हो। प्रदूषण फैला रहे हो। मेरा प्राकृतिक सौंदर्य नष्ट हो रहा है। आपके अंधे स्वार्थ ने वन्यजीवों का जीना दूभर कर दिया है। सारा प्राकृतिक संतुलन बिगड़ रहा है। यह प्रलय को निमंत्रण है दोस्तो! कहाँ गया है आपका विवेक? ऐसा न हो कि मेरा हरा–भरा प्रांगण रेगिस्तान में बदल जाए! रोको, प्रकृति के साथ होते इस अन्याय को रोको। आप स्वयं के पाँवों पर कुल्हाड़ी मत मारो। वरना एक दिन आपको पछताना पड़ेगा।

मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि वह आपको सद्बुद्धि दे।

–शिव मृदुल

शब्दार्थ

रमणीय	–	सुंदर	प्रलय	–	महाविनाश
निमंत्रण	–	बुलावा	कुलाँचे भरना	–	आनंद मग्न होकर छलाँग लगाना
झुंड	–	समूह	आपत्ति	–	एतराज
सघन	–	घना	बहुतायत	–	अधिकता
प्रफुल्ल	–	खुश, प्रसन्न	भव्य	–	विशाल

अभ्यास कार्य

पाठ से

सोचें और बताएँ

1. अरावली पर्वत का जन्म कौनसे युग में हुआ?
2. अरावली पर्वत की ऊँचाई क्यों घट रही है?
3. 'आड़ावल' किस भाषा का शब्द है?

लिखें

बहुविकल्पी प्रश्न

1. गुरुशिखर स्थित है–
   (क) डूँगरपुर ज़िले में (ख) सिरोही ज़िले में
   (ग) उदयपुर ज़िले में (घ) जालौर ज़िले में
2. खनिजों का अजायबघर कहलाता है–
   (क) राजस्थान (ख) गुजरात
   (ग) पंजाब (घ) हरियाणा

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. ताजमहल का निर्माण किस पत्थर से हुआ है?
2. जरगा पहाड़ियों की ऊँचाई कितनी है?
3. अरावली की चौड़ाई तथा ऊँचाई किस दिशा में अधिक है?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. अरावली का प्राचीन नाम 'आड़ावल' क्यों पड़ा?
2. दक्षिणी अरावली का विस्तार कौन–कौन से ज़िलों में है?
3. अरावली पर्वत में कौनसे खनिज मिलते हैं?

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

1. अरावली क्या देखकर प्रफुल्ल होता था? पाठ के आधार पर वर्णन कीजिए।

2. 'किंतु मित्रो! मेरे मन में एक पीड़ा है।' अरावली पर्वत की पीड़ा को विस्तार से लिखिए।

भाषा की बात

1. चिड़ियाएँ चहकती हैं। शेर दहाड़ते हैं। इसी प्रकार अन्य पशु–पक्षियों की आवाज़ों को क्या कहते हैं? लिखिए।
2. पाठ में आए व्यक्तिवाचक संज्ञा शब्दों को छाँटिए।
3. 'यहाँ बहने वाली हवाओं ने यह मेरे कान में कहा है।' हवा का कान में कहना भाषा का विशिष्ट प्रयोग है। प्राकृतिक घटकों को लेकर ऐसे ही कुछ अन्य वाक्य बनाइए।
4. इस पाठ में हिंदी भाषा के साथ अंग्रेजी, राजस्थानी तथा उर्दू के शब्द भी आए हैं; जैसे– 'ज़माना' उर्दू भाषा का शब्द है। ऐसे ही उर्दू, अंग्रेजी तथा राजस्थानी के शब्द छाँटिए व सूची बनाइए।

पाठ से आगे

1. 'अरावली की आत्मकथा' में आपने पढ़ा कि अंधे स्वार्थ के कारण आज पहाड़ों का प्राकृतिक सौंदर्य नष्ट हो रहा है। पहाड़ों के प्राकृतिक संतुलन को बिगड़ने से बचाने के लिए हम क्या–क्या कर सकते हैं?
2. आदिवासी समाज प्रकृति के अत्यंत समीप रहा है। आदिवासियों ने प्रकृति को बचाने में कैसे मदद की है?

शिक्षक के लिए

बच्चों को 3 या 6 समूह में बाँटें। उन्हें नीचे लिखे अनुसार कार्य बाँटें।

(1) अरावली पर्वत किन–किन राज्यों में फैला हुआ है? लिखिए।

(2) अरावली पर्वत की गोद में बसे शहरों के नाम लिखिए।

(3) अरावली पर्वत में बने अभयारण्य व उनकी विशेषताएँ लिखिए।

अब इन्हें मानचित्र में दिखाते हुए प्रस्तुत कराएँ।

यह भी करें

1. आपने 'अरावली की आत्मकथा' पढ़ी। आत्मकथा हिंदी की एक महत्त्वपूर्ण विधा है जिसमें लेखक स्वयं अपनी कहानी कहता है। आप भी अपने बारे में कुछ लिखकर कक्षा में सुनाइए।
2. अरावली से जुड़ी कोई कविता तलाशिए और भित्ति पत्रिका में प्रकाशन हेतु शिक्षक/शिक्षिका को दीजिए।

जानें, गुनें और जीवन में उतारें

पेड़ लगाएँ, पेड़ बचाएँ।
पानी बचाएँ, धरती बचाएँ, देश बचाएँ।
पर्यावरण का रखें ध्यान, तभी बनेगा देश महान।